महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास(एन0बी0टी0) द्वारा आयोजित
'पटना पुस्तक–मेला' गाँधी मैदान, पटना में आयोजित कार्यक्रम
(दिनांक 01 दिसम्बर, 2015, 3.00 बजे अप0) के अवसर पर सम्बोधन

बिहार विधान परिषद् के अध्ययनशील और विचार–प्रवण माननीय सदस्य–द्वय डॉ0 रामवचन राय जी एवं डॉ0 किरण घई जी, प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डॉ0 ओ0 पी0 जायसवाल जी, मीडिया प्रतिनिधिगण एवं कार्यक्रम में उपस्थित पुस्तकप्रेमी बिहार के अत्यंत प्रतिभावान, ज्ञानवान और कर्मशील भाइयों एवं बहनों !

बिहार में पुस्तक मेला के प्रतिवर्ष आयोजन एवं इसकी सफलता की कहानी मैं बराबर सुनता था, परन्तु आज यहाँ आकर एवं पिछले कुछ दिनों के समाचार पत्रों की खबरों को देखकर मुझे लगा है कि आम बिहारवासी, विशेषकर युवा वर्ग पुस्तकों के प्रति काफी उत्सुकता और आत्मीयता रखते हैं। परिणामतः बाहर के सभी प्रमुख प्रकाशक यहाँ के पुस्तक मेले में आने को बराबर तत्पर एवं उत्साहित दिखते हैं।

एक छोटे से अंतराल में इस गाँधी मैदान में तीन–तीन पुस्तक मेलों का आयोजन होना, इस बात का सबूत है कि बिहार में पुस्तकों के प्रति आम जन में बहुत ललक है। सचमुच, पुस्तकें सदैव हमारे एक कुशल और सच्चे मित्र की भूमिका में होती हैं। जीवन में सुख हो, शांति हो, आनंद हो तो पुस्तकें हमें और अधिक पुलकित कर सकती हैं किन्तु अगर मन उत्साहविहीन हो, अवसाद में हो, थका–हारा हो, तो भी पुस्तकें हमें ढाढ़स बँधा सकती हैं, हममें उत्साह और आत्म–बल भर सकती हैं, जीवन के सच्चे उद्देश्य और उत्कर्ष की ओर अभिप्रेरित कर सकती हैं। पुस्तकें समाज का आईना बन हमें सही मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। मुझे लगता है कि ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न प्रक्षेत्रों में बिहारी युवाओं की अनगिनत और

अनूठी सफलताओं के पीछे उनका यह पुस्तक–प्रेम ही है, जो उन्हें जीवन के उच्चतम शिखर पर पहुँचाता है।

मित्रों, अभी आप बिहार की सांस्कृतिक विरासत पर विद्वानों के सारगर्भित विचार सुन रहे थे। बिहार की धरती, ऋषियों, मुनियों, ज्ञानियों, तपस्वियों, राष्ट्रनायकों, संतों, सूफियों, कलाविदो एवं विद्वानों की धरती रही है। मुझे तो लगता है बिहार की संस्कृति, भारत की संस्कृति का वह समुच्चय और समाहार रूप है, जिसकी विविधाओं में ही एक प्रबल एकात्मकता है, जिसकी बहुवर्णी छवि में ही एक अद्‌भुत सौन्दर्य है।

बिहार आकर, और अपने अबतक के छोटे से कार्य–काल में बोधगया, नालंदा, मुजफ्‌फरपुर, समस्तीपुर आदि स्थानों पर जाकर मैंने जो महसूस किया है, वह यह कि बिहार की सांस्कृतिक जड़ें काफी गहरी जमी हैं।

हमारा गौरवशाली बिहार ! सम्राट अशोक और चन्द्रगुप्त मौर्य का प्राणवान बिहार ! महात्मा बुद्ध, महावीर और गुरू गोविन्द सिंह का पावन बिहार ! चाणक्य, आर्यभट्‌ट, वाणभट्‌ट, वात्स्यायन, सरहपा, मंडन मिश्र, भारती मिश्र, विद्यापति, भिखारी ठाकुर, दिनकर, नागार्जुन, रेणु जैसे उद्‌भट विद्वानों–साहित्यकारों का विपुल ज्ञानी बिहार ! शेरशाह, बाबू कुँवर सिंह, पीर अली, मौलाना मजहरूल हक, स्वामी सहजानंद सरस्वती, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, बाबू जगजीवन राम, कर्पूरी ठाकुर जैसे राष्ट्रनायकों का गौरवान्वित बिहार ! वीर शहीद तिलका माँझी, दशरथ माँझी, जुब्बा सहनी जैसे जीवनदानी कर्मशीलों का गर्वोन्नत बिहार ! – हमारा प्यारा बिहार आज भारत वर्ष का एक ऐसा जीवन्त, कलावन्त, ज्ञानवंत और समृद्धशाली प्रदेश है, जिसपर पूरे भारतवर्ष को नाज है।

बिहार की बहुरंगी सांस्कृतिक विरासत में यहाँ की विपुल लोक–संस्कृति का बहुत बड़ा योगदान है। बिहार की लोक संस्कृति इतनी समृद्ध और व्यापक है कि उसमें अनमोल कला के भी तत्व मिलेंगे, सामाजिक चिन्तन के भी बहुआयामी स्वर मिलेंगे, मनोहरी संगीत

के सुर भी सुनाई देंगे और रंगमय रूचिर नृत्य के दर्शन भी होंगे। यहाँ की देशज संस्कृति में लोकगीतों की मनोहरी छटा है, लोक गाथाओं की समृद्ध परम्परा है तथा शिल्प–कला और चित्रकला की आकर्षक छवि समाहित है। मित्रों, बिहार की सांस्कृतिक छवि में लोक–जीवन का सुवास है, इसकी अनगढ़ता में भी एक सुरूचिपूर्ण सौन्दर्य है। मिथिला की चित्र–कला हो या भोजपुरी और मगध क्षेत्र की सांगीतिक समृद्धि– सबमें बिहार की आत्मा मुखरित होती है। और यह बिहार की आत्मा सीधे तौर पर भारत की राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकता और समृद्धि से जुड़ी हुई है।

आज हमें ऐसे साहित्य की आवश्यकता है, जो सरल, सुगम एवं सकारात्मक हो। सरलता से मेरा अभिप्राय यह है कि वह ऐसी बोलचाल की भाषा में हो, जिसे समाज का अधिकतम जन–मानस ग्रहण कर सके। सुगमता का मतलब यह है कि यह साहित्य सामान्य पाठकों के लिए भी कम कीमत पर आम बाजार में उपलब्ध हो। मैं जब सकारात्मक साहित्य की बात करता हूँ , तो मेरा आशय यह है कि आज वैसे साहित्य की आवश्यकता है जो समाज में शांति, एकता और सदभावना का विकास कर सके और व्यक्ति में अच्छे संस्कार भर सके। हम आज देख रहे हैं कि नकारात्मक साहित्य कम कीमत पर आम स्थानों पर सहज रूप में उपलब्ध है, जिस कारण समाज की वर्तमान और भावी पीढ़ी दुष्प्रभावित हो रही है। रचनाकारों और प्रकाशकों दोनों को इस संकट से उबरने की पहल करनी होगी और अच्छे सकारात्मक साहित्य को सरल भाषा में आम जन को सुलभ कराना होगा। मुझे विश्वास है ऐसे पुस्तक मेलों के आयोजन से हमें इस दिशा में निश्चय ही सफलता मिलेगी।

आप मेले में पुस्तकें पढ़ने–खरीदने आए हैं। यह प्रशंसनीय बात है कि 'नेशनल बुक ट्रस्ट' ने विभिन्न सांस्कृतिक–साहित्यिक विषयों पर विचार–गोष्ठियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी इस क्रम में यहाँ आयोजन किया है। भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक कलाकारों की प्रस्तुतियाँ भी आपका मनोरंजन कर रही हैं। ये कलाकार आपका स्वस्थ्य

मनोरंजन करने के साथ–साथ अपने–अपने प्रदेशों की सांस्कृतिक विशेषताओं के भी संवाहक हैं।

मैं 'पटना पुस्तक मेला' के भव्य आयोजन के लिए नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष बलदेव जी भाई शर्मा को साधुवाद देता हूँ एवं न्यास के स्थानीय अधिकारी डॉ0 कमाल अहमद जी भी हमारे बधाई के पात्र हैं।

इस कार्यक्रम के माध्यम से मैं समस्त बिहारवासियों विशेषतः युवाओं का आहवान करता हूँ कि वे एक सशक्त बिहार, समुन्नत बिहार एवं सुसंस्कृत बिहार के नवनिर्माण में पूरी तत्परता और उत्साह से जुट जाएँ।

आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद !

जय हिन्द।

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।